जेल में बंद सरगना चला रहा था फर्जी अंकपत्र-डिग्री बनाने का गिरोह, चार जालसाज गिरफ्तार

ब्यूरो/अमर उजाला, लखनऊ Updated Tue, 10 Oct 2017 01:37 AM IST

अमर उजाला

ऐड-लाइट अनुभव के लिए अमर उजाला
एप डाउनलोड करें

अभी इनस्टॉल करें

मीडिया को सम्बोधित करते एसएसपी दीपक कुमार - फोटो : amar ujala

पुलिस ने 10वीं, 12वीं, बीए, बीकॉम, बीएससी, इंजीनियरिंग और लॉ के फर्जी अंकपत्र बनाकर पांच से दस हजार रुपये में बेचने वाले गिरोह का पर्दाफाश किया है। रविवार रात हीवेट रोड स्थित सेठी कॉम्पलेक्स से पकड़े गए गिरोह के चार सदस्यों से फर्जी अंकपत्र और डिग्रियों समेत लैपटॉप, प्रिंटर समेत काफी सामान बरामद किया गया है। गाजियाबाद निवासी गिरोह का सरगना इस समय राजस्थान की बाड़मेर जेल में है। वहीं से वह बेटे और भतीजे की मदद से गिरोह का संचालन कर रहा है। पुलिस बेटे और भतीजे की तलाश कर रही है।

एसएसपी दीपक कुमार ने बताया कि क्राइम ब्रांच व कैसरबाग पुलिस की गिरफ्त में आए आरोपियों में हुसैनगंज के माल एवेन्यू रजानगर निवासी मो. खालिद कादरी, मथुरा के शेरगढ़ बसई बुजुर्ग निवासी अमित सिसोदिया, दरभंगा बिहार के शाही अहमद, हरदोई के सुरसा पचलाई निवासी विकास श्रीवास्तव शामिल है। यह सभी जालसाजी कर फर्जी मार्कशीट बनाने का काम करते हैं।

सरकारी गजट दिखाकर पंजीकरण के नाम पर वसूलते थे रकम

एसएसपी के मुताबिक, जालसाज प्रदेश सरकार का फर्जी गजट दिखाकर नवयुवकों को भ्रमित करते थे। उन्हें बताते थे कि संस्थान से संबद्ध स्कूलों से पढ़ाई करने से आसानी से हाईस्कूल व इंटर की मार्कशीट मिल जाएगी। जालसाज हाईस्कूल, इंटर के अलावा बीए, बीएससी, बीकॉम, इंजीनियरिंग व लॉ की भी फर्जी डिग्रियां बनाते थे।

एएसपी क्राइम ब्रांच दिनेश कुमार सिंह ने बताया कि जालसाजों ने लोगों को झांसा देने केलिए सभी संस्थानों की वेबसाइट बना रखी थी। इसमें राजकीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान लखनऊ, उत्तर प्रदेश www.riosup.org, बोर्ड ऑफ हॉयर सेकेंडरी एजुकेशन दिल्ली, www.bhsedelhigov.in, राज्य मदरसा शिक्षा बोर्ड उत्तर प्रदेश लखनऊ wwsbmeup.org, राज्य मुक्त विद्यालय परिषद उत्तरप्रदेश लखनऊ www.rmpup.in, भारतीय विद्यालयी शिक्षा संस्थान www.iise.edu.in शामिल है। इन वेबसाइटों से नवयुवकों को फर्जी तरीके से विज्ञापन निकालकर प्रवेश कराते थे। इसके बाद उनकी परीक्षा लेकर अंकपत्र, प्रमाण पत्र जारी करते। वेबसाइट का पासवर्ड रोज बदला जाता था।